अप्रैल-जून, 2022

बातूनी

अंक-127

अप्रैल-जून, 2022

बातूनी

अंक-127

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- कोयल आई 4
- समझदारी 5
- किताब 6
- दो दोस्त 7
- ईमानदारी 8
- चिड़िया रानी 9
- गाय से प्यार 10
- चंदा मामा 11
- शेर व हाथी 11
- सावन का महीना 12
- पहेलियां 13
- आये घर मेहमान 14
- सच्ची दोस्त 15
- बरसात आई 16
- मैं और शेर 17
- हीरो हैं पापा 18
- साधु का चमत्कार 19
- आ चिड़िया आ 20
- बंदर 21
- मेरा अनुभव 22
- प्यारी माँ 23

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल
हेमन्त शर्मा
नौरतमल पारीक
मंजू सिंह
रामजीलाल

परामर्श
रीना दास

कम्प्यूटर सैटिंग
ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग
गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

मुख्य आवरण : आसमा, समूह–मेहन्दी
पिछला आवरण चित्र : फोटो कोलाज
बॉर्डर बनाया : सानिया, समूह–मेन्हदी

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

नमस्ते, आशा करती हूं कि आप स्वस्थ और कुशल होंगे। आप सभी को पता है कि इस वर्ष काफी उमस भरी गर्मी पड़ी। लेकिन अब बरसात का मौसम आ गया है। रिमझिम–रिमझिम बरसात बरसेगी। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली होगी। सभी का बरसात में घूमने व नहाने का मन करेगा। सावन में आप लोग खूब झूले भी झूलना। लेकिन आप–अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना। इस मौसम में पानी में भीगने तथा बार–बार मौसम के बदलाव से बीमार होने के अवसर अधिक होते हैं।

मुझे पता है कि आप सभी मेरा बेसब्री से इंतजार कर रहे होंगे। साथ ही हमारी शाला के स्थापना दिवस व 15 अगस्त की तैयारी भी कर रहे होंगे। मैं बहुत जल्दी ही आप लोगों के बीच नई–नई कहानियां, कविताएं, अनुभव व पहेलियां लेकर आ रही हूं। मुझे यह भी पता है कि हमारे विद्यालय में बहुत सारे नए साथी भी आए हैं। उनसे भी मेरी मुलाकात होगी। आशा करती हूं कि नये बच्चे भी कविताओं व कहानियों को पढ़कर आनंद लेंगे और अपने अनुभव भी मुझे भेजेंगे। आप अन्य साथी भी इन सभी चीजों को पढ़कर अपने अनुभव व विचार मुझे भेजना। मैं आप सभी के विचारों का इंतजार करूंगी।

आपकी प्रतिक्रिया के इंतजार में,

आपकी अपनी बातूनी।

कोयल आई

कोयल आई कोयल आई, कितनी सुन्दर कोयल आई।
मीठी आवाज संग में लाई, हरे–भरे पेडों पर आई।

मीठा–मीठा गाना गाती, बच्चों के यह मन को भाति,
हम सबकी है राज दुलारी, मीठे–मीठे फल यह खाती,

कोयल आई कोयल आई, कितनी सुन्दर कोयल आई,
मीठी आवाज संग में लाई ...।

– अलवीरा, समूह–आँगन

समझदारी

एक गांव में एक आदमी रहता था। वह बहुत बड़ा चोर था। एक दिन वह एक घर में घुस गया। उस घर में जाकर देखा कि वहां पर चार लोग सो रहे थे। उनमें से दो तो पति–पत्नी थे और दो उनके लड़के थे। पति का नाम किशोर और पत्नी का नाम रसीला था। बड़े लड़के का नाम सोनू और छोटे लड़के का नाम मोनू था। चोर उन लड़कों के पास जाकर उन्हें धीरे से जगाता है और बोलता है कि मैं आपके पिताजी का दोस्त रामलाल हूँ। बच्चे बोलते हैं हमने तो आज तक इस नाम के किसी आदमी के बारे में नहीं सुना। आदमी ने सोचा कि चलो मैं थोड़ा झूंठ बोल लेता हूं, वह उनको याद दिलाने के लिए कोई झूंठी घटना बताता है। हम दोनों कॉलेज में साथ–साथ पढ़ते थे और फिर हम दोनों पढ़ लिखकर अपने–अपने काम पर लग गये। आपके पापा तो यहां गांव में रहने लगे और मैं मजदूरी करने के लिए शहर चला गया। उसको लगा कि शायद मैं यहां लौटकर नहीं आ पाऊंगा। लेकिन महगांई की बढ़ती मार के कारण मैं यह सोच कर आया हूं कि गांव में मेरा दोस्त है, उसके पास चलता हूं शायद मुझे वहां कुछ ना कुछ सामान मिल जाए। उसकी इस बात से दोनों बच्चों को शक हो जाता है कि आदमी झूंठा है। बच्चों ने उसे बड़े प्यार से बैठाया और अपने पापा को जगा कर कहा कि बाहर कोई चोर बैठा है तो उसके पापा ने बड़ी समझदारी दिखा कर पुलिस को फोन किया। पुलिस उस नामी चोर को पकड़ कर ले गई। इस प्रकार सोनू और मोनू की समझदारी से घर में चोरी होने से बच गई।

– अलवीरा, समूह–रोशनी

किताब

छोटी–सी प्यारी–सी मेरी किताब,
सुंदर चित्रों वाली मेरी किताब,

पास में रहती है मेरी किताब,
सबसे अच्छी दोस्त है मेरी किताब,

मुझको प्यारी लगती मेरी किताब,
पढ़ना लिखना सिखाती मुझको किताब,

दुनिया के बारे में बताती मुझको किताब,
यह है मेरी किताब, यह है मेरी किताब।

– परी समूह के बच्चों द्वारा बनाई गई कविता।

दो दोस्त

एक जंगल में शेर रहता था। उस जंगल में एक खरगोश और एक बंदर भी रहता था। दोनों दोस्त थे। दोनों दिन भर उछलते–कूदते रहते थे। एक दिन शेर को जंगल में कोई शिकार नहीं मिला। थोड़ी दूर पर उसे खरगोश दिखाई दिया। खरगोश तालाब के किनारे खेल रहा था। बंदर भी वहीं पेड़ पर बैठा था। उनका ध्यान शेर पर नहीं था। शेर खरगोश को पकड़ने ही वाला था। बंदर ने शेर को देख लिया। उसने अपनी पूछ नीचे लटका दी। खरगोश ने पूंछ पकड़ ली। बंदर ने खरगोश को ऊपर खींच लिया और अपने दोस्त की जान बचा ली।

– तितली समूह के बच्चों द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर बनाई गई कहानी

ईमानदारी

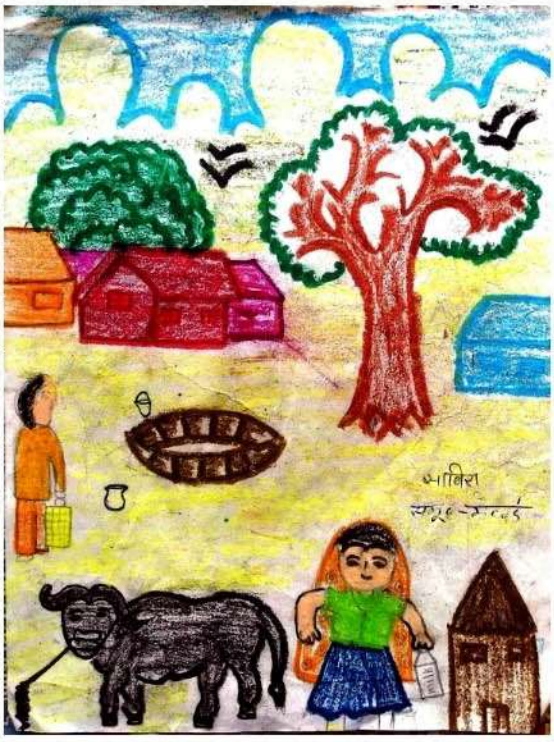

नागपूर गांव में बहुत सारे लोग रहते थे। वह गांव सभी सुख–सुविधाओं से भरा पूरा था। सब लोग मजे से रहते और अपना जीवन–यापन करते थे। उस गांव में एक बूढ़ी औरत रहती थी। वह भैसों का दूध बेचकर अपना गुजारा करती थी। उसने तीन भैसें पाल रखी थी। बूढ़ी माँ के साथ कोई नहीं रहता था। इसलिए वह स्वयं ही दूध निकालती और उसे बेचने जाती थी। सभी गांव वाले उससे बहुत प्यार करते थे। बुढ़ी माँ ईमानदारी से अपना काम करती और गांव वालों को पूरा और शुद्व दूध देती थी। यह सब बहुत दिनों से चल रहा था। अचानक एक दिन उसकी तबियत खराब हो गई, उसके साथ कोई नहीं होने के कारण सभी गांव वालों ने उसकी काफी सेवा की, जैसा जिससे बना उन्होंने वैसा किया लेकिन शायद होनी को कोई नहीं टाल सका और वो चल बसी। गांव वाले दुखी हो गए। गांव वालों को बूढ़ी माँ के जाने के दुख के साथ–साथ अपने स्वास्थ्य की भी चिन्ता थी लेकिन किया कुछ भी नहीं जा सकता था क्योंकि उसकी जैसी ईमानदारी के साथ कोई काम नहीं करता है।

– साबिरा, समूह–मेहन्दी

चिड़िया रानी

सुबह सवेरे आती चिड़िया।
दाना चुग कर जाती चिड़िया।

सबको गीत सुनाती चिड़िया।
मेरे मन को भाती चिड़िया।

जब मैं उसके पास जाती।
मुझे देखकर फुर्र से उड़ जाती।

कितनी सुन्दर मेरी चिड़िया।
जब भी देखू पेड़ पर पाती।

चीं,चीं,चीं कर शौर मचाती।
सुबह सवेरे आती चिड़िया।

सुबह सवेरे आती चिड़िया।
दाना चुग कर जाती चिड़िया।

– फातिमा, समूह–आंगन

गाय से प्यार

एक गांव में एक गंभीर नाम का किसान रहता था। वह पास के ही खेत में गाय चराता और अपना गुजारा करता था। गंभीर के घर पर बीवी और बच्चे भी थे। गंभीर गायों का दूध निकाल कर ईमानदारी से बेचता था। एक दिन गंभीर का दोस्त आया और बोलता है कि क्या तुमने सुना है, जिस प्रकार घोड़ों की दौड़ होती है उसी प्रकार गायों को भी दौड़ाया जाता है। क्या तुम अपनी गायों को इस दौड़ में भाग लेने के लिए तैयार करोगे ? गंभीर बोलता है, "देखो मुझे मेरी गाय से प्यार है। मैं इनको इस काम में नहीं लगा सकता क्योंकि दौड़ में भाग लेने के लिए बहुत सारी चीजें देखनी पड़ती है, जैसा कि अच्छा खिलाना–पिलाना और देखभाल भी करनी पड़ेगी।" मेरे पास इतनी आमदनी नहीं है कि मैं इनको दौड़ के लिए तैयार कर सकूं। उसके दोस्त ने कहा कि प्रयास तो किया जा सकता है लेकिन गंभीर इसके लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कहा, "मैं अपनी गायों की ठीक से देखभाल कर लूं, यही मेरा धर्म है। इनको पाल कर अपना और अपने परिवार का पालन पोषण कर लूंगा"।

– अलवीरा, समूह–रोशनी

चंदा मामा

चंदा मामा कितने प्यारे, बच्चों के हैं राज दुलारे।
आओ चंदा मामा आओ, अपने मन की बात बताओ।

मेरे घर पर आना तुम, दही बताशे खाना तुम।
मामी को भी लाना तुम, गीत कविता सुनाना तुम।।

चंदा मामा आना तुम, दिल की बात सुनाना तुम।

— इकरा, नाजिस, जोया, रेशमा, इन्दु के द्वारा बनाई गई कविता समूह परी

शेर व हाथी

एक बार शेर व हाथी दोस्त थे। एक दिन वो नदी किनारे गए। शेर ने तालाब में मछली देखी। शेर मछली को पकड़ने वाला था कि मछली गहरे पानी में चली गई। शेर पानी में डूबने लगा। हाथी ने बहुत मेहनत करके शेर को बचा लिया। शेर ने अपने दोस्त को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।

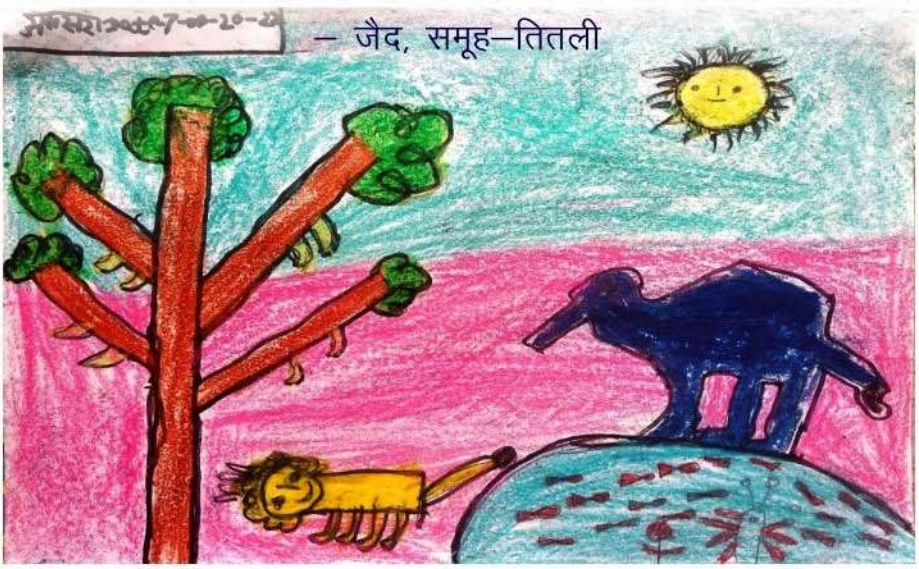

— जैद, समूह–तितली

सावन का महीना

सावन का महीना आता है, संग हरियाली लाता है।
जो गर्मी से मुरझे पौधे, उनको भी खिला जाता है।।

सावन का महीना आता है, मन को बहुत भाता है।
जमकर खूब बरसता है, फिर जाने कहाँ छिप जाता है।

सावन का महीना आता है, त्योहारों की बोछार लाता है।
मन रंगीन कर जाता है, सबको बहुत भाता है।।

– नाजिया, समूह– मेहन्दी

पहेलियाँ

1. काली सवारी गौरा सवार,
एक उतरे दूसरा आ जाए।

2. एक कुल्हड़ जिसमें,
चमक ही चमक।

3. एक ऐसी चीज है,
जो बहुत सारे कपड़े
पहनती है।

4. कटोरा में कटोरा,
बेटा बाप से भी गौरा।

5. पूरे घर में डोल कर,
एक जगह खड़ा हो जाता हूँ।

5. मैं कटू, मैं ही मरू,
तू क्यों रोया ?

(समूह–उजाला)

आये घर मेहमान

घर में जब मेहमान आते, कोई लड्डू, बर्फी लातें।
उन्हें देखकर हम खुश हो जाते, मम्मी जब हमें लड्डू देती।।
लड्डू पा कर हम इतराते, आपस में हम झगड़ा करतें।
मेंहमानों से नजर चुरा कर, मम्मी हमें खूब डराती।।
चुप हो जाओं, चुप हो जाओं, बड़ें प्यार से हमें बुलाती।
आजा दिलखुश मेरे पास, आजा उजेफा मेरे पास।।
मेंहमानो के जाते ही, हमारी होती खूब हजामत।
क्या लड्डू, क्या बर्फी खाया, मेंहमानो पर गुस्सा आया।।

– दिलखुश, समूह–आँगन

सच्ची दोस्त

दो गाय थी। एक का रिमझिम और दूसरी का रुनझुन नाम था। दोनों पक्की दोस्ती थी। साथ–साथ रहती। साथ–साथ नदी पर पानी–पीने जाती और जंगल में चरने साथ जाती। दोनों हमेशा साथ रहती और एक–दूसरे की मदद करती। एक दिन रिमझिम बीमार हो गई। उसने रुनझुन से कहा, "आज मैं तुम्हारे साथ नहीं आ पाऊंगी, तुम अकेले ही चली जाओ।" रुनझुन ने कहां, "हम दोनों सहेलियां हैं। हमेशा साथ रहते हैं। मैं तुम्हें अकेला छोड़कर नहीं जाऊंगी।" रुनझुन दौड़ती हुई डॉक्टर के पास गई और बुला कर ले आई। डॉक्टर ने रिमझिम को दवाई दी। डॉक्टर ने रुनझुन से कहा, "तुम इसका ध्यान रखना। दवाई समय पर देते रहना, जल्दी ठीक हो जाएगी।" रुनझुन ने रिमझिम के लिए खाना बनाया और खिलाया फिर उसे दवाई दी। रुनझुन पूरे समय रिमझिम के साथ बैठी रही। उसकी देखभाल करती रही। कुछ समय बाद रिमझिम ठीक हो गई। उसने रुनझुन को धन्यवाद दिया और कहा, "अगर तुम नहीं होती तो, पता नहीं मेरा क्या होता।" दोनों सहेलियां एक–दूसरे के गले लग गई और हमेशा ऐसे ही मुस्कुराते रहने का वादा किया।

– परी समूह के बच्चों द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर बनाई गई कहानी।

बरसात आई

बरसात आई बरसात आई, देखो बच्चो बरसात आई।
मोर नाचे छम–छम, छाता लेकर निकले हम।।

बादल गरजे गड़, गड़, बिजली चमके चम, चम।
बच्चे नाचे धम, धम, बरसात आई बरसात आई।।

रिमझिम करती बरसात आई, देखो बच्चो बरसात आई।

– साबिरा समूह–मेहन्दी

मैं और शेर

एक दिन की बात है कि मैं स्कूल से घर जा रहा था। तो मुझे रास्ते में एक शेर दिखाई दिया। वह जोर जो से दहाड़ रहा था। उसे देखकर मैं घबरा गया और वहां से भागने लगा। भागते भागते रास्ते मे मुझे एक आदमी मिला। उसने पूछा कि भाई तुम क्यों भाग रहे हो ? मैंने उससे कहा कि रास्ते में मुझे एक शेर दिखा है। इसलिए भाग रहा हूं। आदमी बोला चिन्ता मत करो। अब तुम मेरे साथ चलो, वह आदमी मुझे उसके घर ले गया। मुझे उसने बड़े प्यार से पानी पिलाया और खाना खिलाया और आराम करने को कहां लेकिन मैं रो–रो कर बार–बार उसे कह रहा था कि मुझे मेरे घर छोड़ दो। उसने मुझे अपनी मोटर साईकिल पर बैठाकर कर मेरे घर छोड़ दिया। उधर मेरे मम्मी–पापा भी बड़े परेशान हो रहे थे। उनके भी रो–रो कर बुरे हाल हो रहे थे। मुझे देखते ही मेरी मम्मी मेरे लिपट गई और

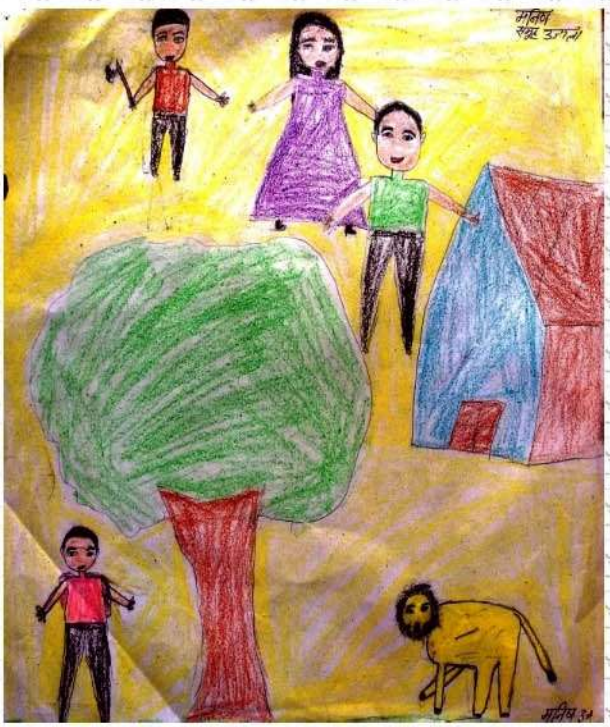

मैं भी उसके लिपट कर रोने लगा। फिर मेरे मम्मी–पापा ने उस आदमी को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद वह आदमी अपने घर चला गया और अब हम तीनों घर वाले बहुत खुश थे। उसके बाद मैं चैन की सांस लेकर सो गया।

– उजाला समूह के बच्चों के द्वारा बनाई गई कहानी

हीरो है पापा

बेटियों के हीरो है पापा, बेटियों की खुशी है पापा।
पापा नहीं तो दुनियां सूनी, सूना है सारा संसार।।

पापा है तो जहान है, बेटियों की जान है पापा।
रोते हुए को हंसा देते हैं पापा, दर्द छुपा लेते है पापा।।

गम में भी मुस्कुरा लेते है पापा, बेटियों की जान है पापा।
बेटियों के हीरो है पापा .....।।

– नाजिया, समूह–मेहंदी

साधु का चमत्कार

एक गांव में एक किसान अपने परिवार के साथ रहता था। वह नेक दिल और ईमानदार था। कभी किसी का बुरा नहीं सोचता था। वह पत्नी और बच्चों को भी यही समझाता था कि अपने भले के लिये दूसरे को दुःख मत देना। परिवार भी उसकी बातों को मानता था। किसान के पास एक बैल था। जिसके साथ स्वयं जुड़कर अपने खेतों को जोतता था। बैल को मालिक पर दया आती थी। लेकिन बेचारा बैल भी क्या करता। एक दिन किसान की पत्नी ने सोचा कि गांव के लोग तो एक बैल से भी खेत जोत लेते हैं और मेरे पति स्वयं बैल के साथ जुडकर खेत जोतते हैं। एक शाम जब किसान खेतों से वापस घर आया तो उसने देखा बैल ने खाना–पीना बंद कर दिया। किसान उसके लिए और भी अच्छी घास लेकर आया। लेकिन बैल घास को सूंघा तक नहीं। किसान बहुत दुःखी हो गया। वह दौड़कर जानवरों के डॉक्टर को बुलाकर लाया। डाक्टर ने दवाई दी। कुछ दिन तक उसकी सेवा की अब बैल ठीक होने लगा। उसने अपनी पत्नी को समझाया कि जानवरों में भी जीव होता है। अगर मैं इसको अकेले को खेत में काम में लूंगा तो यह बहुत कमजोर हो जायेगा। इस कारण मैं इसके साथ खेतों में काम करता हूं। पत्नी को गलती का एहसास हो गया। उसने पति से क्षमा मांगी। अब वह उसकी देखभाल करने लगी। कुछ दिनों के बाद बैल वापस ठीक हो गया। किसान का परिवार खुश हो गया।

– विकास, समूह–आँगन

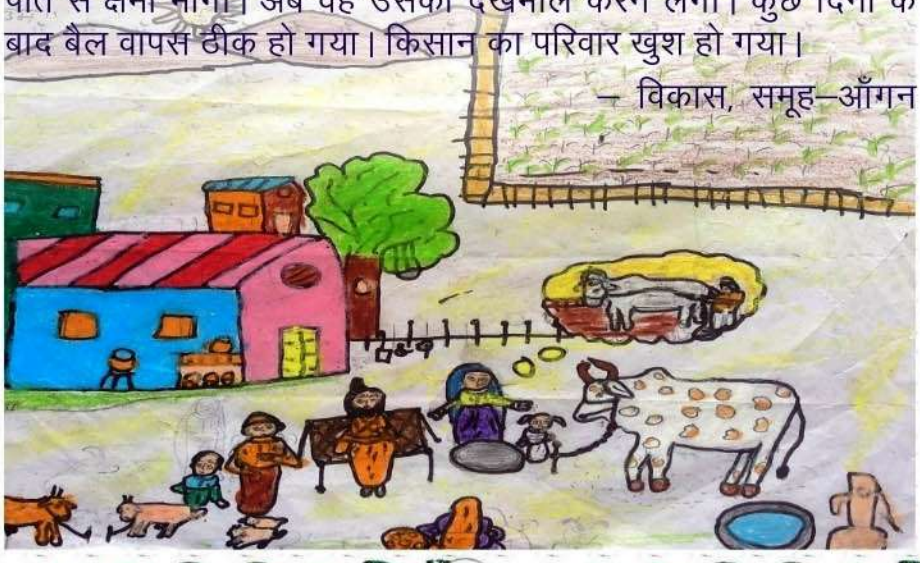

आ चिड़िया आ

चिड़िया हर दिन आना, बगिया में आकर जाना।
दाना मन भर खाना, खाना खाकर उड़ मत जाना।।

बढ़िया–बढ़िया गाना गाकर सबका दिल बहलाना।
खुले आसमान में जाकर सबको गीत सुनाना।।

चिड़िया हर दिन आना।
बगीचे में आकर, दाना खाकर उड़ मत जाना।।

– फिजा, समूह–खुशबु

बंदर

एक था बंदर, मस्त कलंदर।
वह गया कोर्ट के अंदर।।

कोर्ट में था वकील, वकील ने चलाया केस।
जज ने दी सजा, वो गया जेल।।

जेल में पड़े डंडे, हो गया मंडे।
मंडे को मारी लात, जब आई बारात।।

बारात के पीछे बंदर, हो गया मस्त कलंदर।।

– निखिल, हर्षिता, मयंक, मोहित, समूह–तितली

मेरा अनुभव

मैं फिजा, दिगन्तर विद्यालय,भावगढ़ में महक समूह में पढ़ती हूँ। मुझे यह स्कूल बहुत अच्छी लगी। क्योंकि यहाँ न तो बच्चों को मारा जाता है और न ही बच्चों के साथ भेद–भाव किया जाता है। जब मैं इस स्कूल में आयी थी तब यहाँ के नियम देखकर मुझे अजीब लगता था। फिर धीरे–धीरे यहाँ के नियम समझ आने लगे। अब मुझे यह स्कूल बहुत अच्छी लगती है। यहाँ के टीचर व बच्चे समान हैं। यहाँ टीचर्स को सर या मैडम नहीं कहा जाता है। यहाँ टीचर्स को उनके नाम के साथ जी लगाकर या महिला शिक्षक को दीदी कह कर बुलाया जाता है। यहाँ के टीचर्स बच्चों से कोई गलती हो जाने पर बात करके उसे समझाते हैं न कि उसे डाँटते या पीटते हैं। यहाँ जब पढ़ाई होती है तो यह नहीं कि कोर्स पूरा करना है। यहाँ के टीचर्स हर एक टॉपिक को अच्छी तरह से समझाते हैं। अगर नहीं समझ आता है तो आगे तब तक नहीं बढ़ते हैं जब तक पीछे का टॉपिक समझ नहीं आ जाता है। इसीलिए मुझे यह स्कूल बहुत अच्छी लगती है।

– फिजा, समूह–महक

प्यारी मां

ओ मेरी प्यारी माँ, ओ मेरी प्यारी माँ।
सारे जग से न्यारी माँ, मेरी माँ प्यारी माँ।।

सुन लो मेरी वाणी माँ, तुमने मुझको जन्म दिया।
मुझ पर इतना उपकार किया, धन्य हुई मैं मेरी माँ,
ओ मेरी प्यारी माँ।।

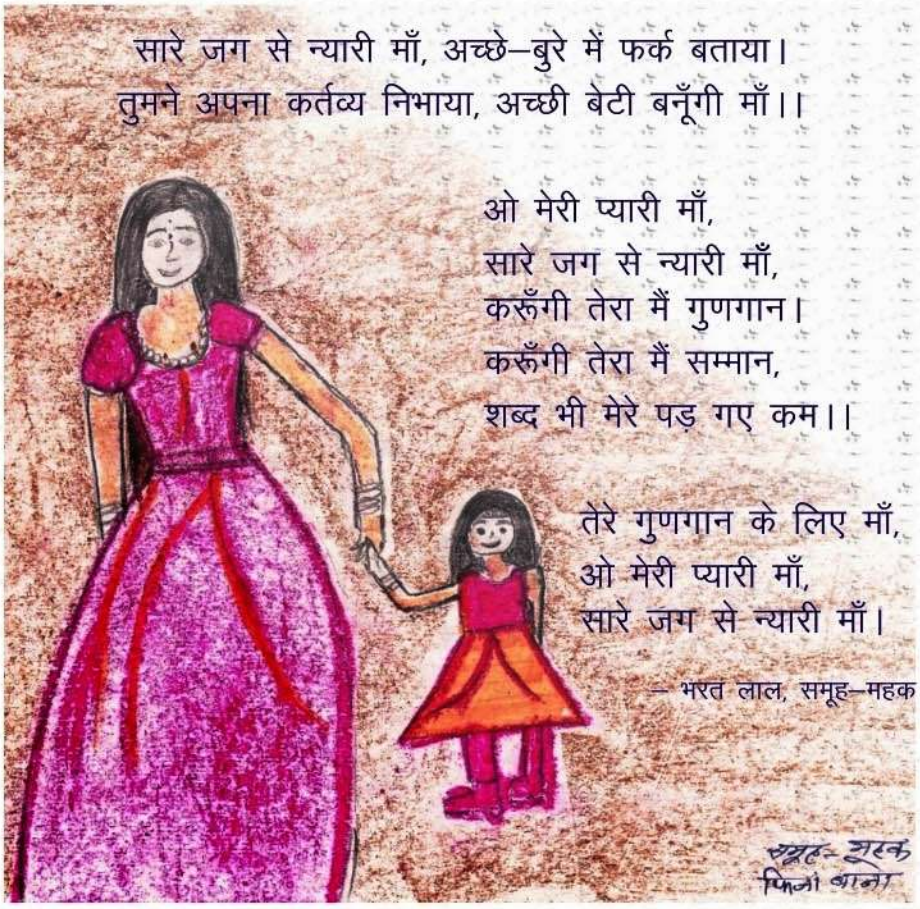

सारे जग से न्यारी माँ, अच्छे–बुरे में फर्क बताया।
तुमने अपना कर्तव्य निभाया, अच्छी बेटी बनूँगी माँ।।

ओ मेरी प्यारी माँ,
सारे जग से न्यारी माँ,
करूँगी तेरा मैं गुणगान।
करूँगी तेरा मैं सम्मान,
शब्द भी मेरे पड़ गए कम।।

तेरे गुणगान के लिए माँ,
ओ मेरी प्यारी माँ,
सारे जग से न्यारी माँ।

– भरत लाल, समूह–महक

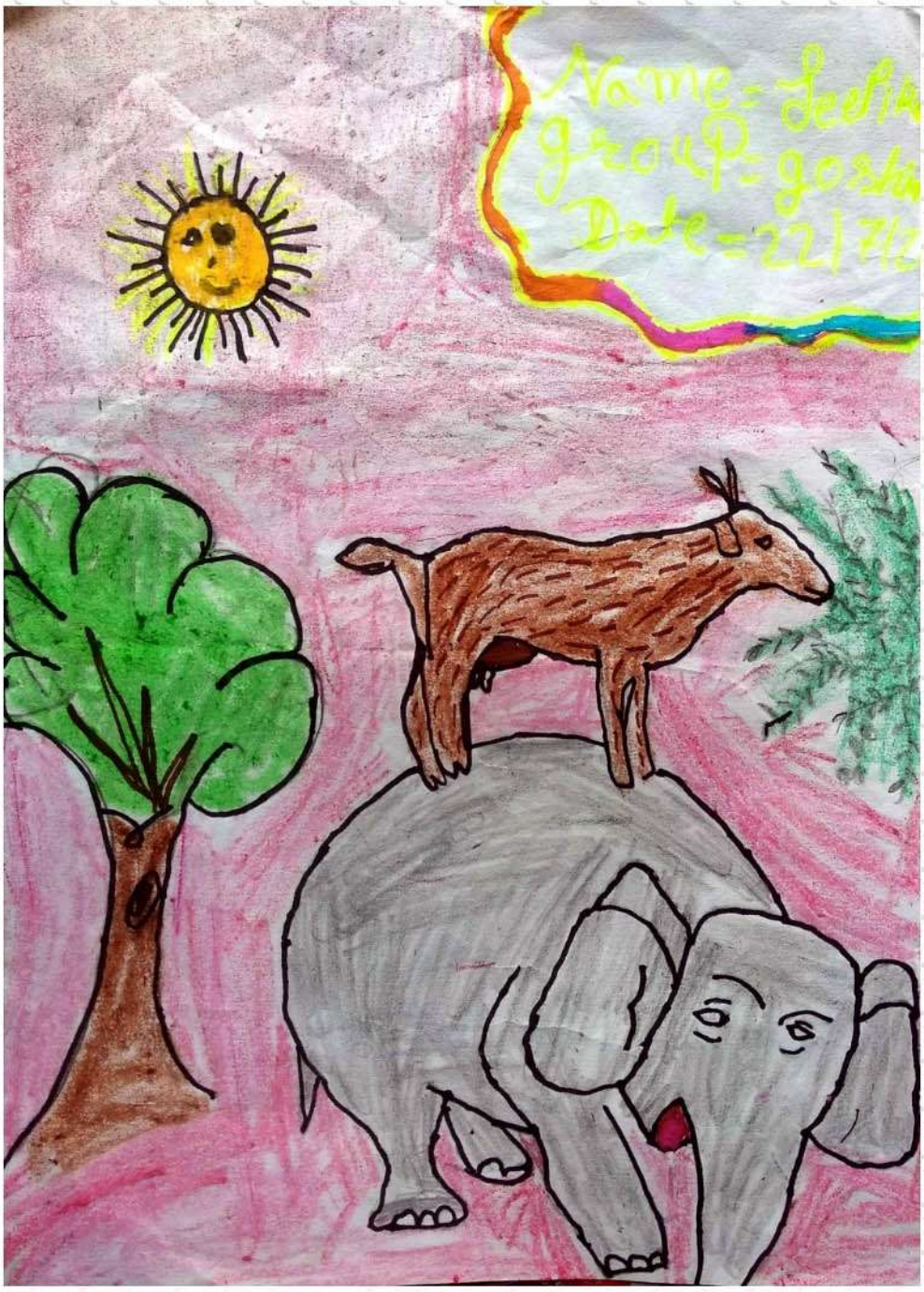

Name =
group =
Date = 22/7/